एक महत्वपूर्ण विशेषता होती है।

(5) परिकल्पना को व्यापक तथा तार्किक होना चाहिए :—

परिकल्पना को व्यापक एवं तार्किक होना चाहिए। अन्यथा शोध लक्ष्य प्राप्त करने लिए संबंधित शोध के लिए पुनः कई उप-परिकल्पाएँ तैयार करनी पड़ती है। अतः व्यापकता एवं तर्कपूर्णता को शोध परिकल्पना का एक उत्तम कसौटी माना गया है।

(6) परिकल्पना को उपलब्ध सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए —

एक उत्तम परिकल्पना शोध से संबंधित विषय में उपलब्ध सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए। जिस शोध परिकल्पना का सिद्धान्तों का व्यापक अध्ययन कर तैयार किया जाता है उसे वैज्ञानिक रूप से उत्तम शोध परिकल्पना की श्रेणी में रखा जाता है।

(7) परिकल्पना शोध के क्षेत्र को सीमित करती है —

एक उत्तम परिकल्पना की यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि उसका क्षेत्र सीमित रहता है। क्षेत्र सीमित नहीं रहने पर यह परिकल्पना न होकर समस्या का रूप ले लेती है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानी करलिंगर (1978) महोदय द्वारा परिकल्पना के

Krishna Nand M.A II Sem (3)

6

क्षेत्र को सीमित रखने की बात कही गई है। इनके अनुसार " परिकल्पना का एक महत्त्वपूर्ण कार्य क्षेत्र को सीमित करना है। "

जब शोध परिकल्पना का क्षेत्र सीमित हो जाता है, तब अध्ययन सामान्य से विशिष्ट बन जाता है। यह तभी संभव हो पाता है जब प्राक्कल्पना निर्माण से शोध का क्षेत्र सीमित हो जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं परिकल्पना से शोध क्षेत्र सीमित हो जाता है और अध्ययन को विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है।

(8) प्राक्कल्पना को वैज्ञानिक परीक्षणों एवं उपकरणों से संबंधित होना चाहिए—

उपलब्ध वैज्ञानिक परीक्षणों से संबंधित होना एक अच्छी शोध परिकल्पना की महत्त्वपूर्ण कसौटी मानी जाती है। अर्थात शोधकर्त्ता के पास शोध कार्य हेतु प्रस्तावित चरों को मापने के लिए साधन उपलब्ध होना चाहिए। चरों को मापने के लिए जब साधन उपलब्ध नहीं होगा, तो परिकल्पना की सत्यता की जाँच संभव नहीं हो पायेगा। इसलिए प्राक्कल्पना में वैज्ञानिक परीक्षणों एवं उपकरणों से संबंधित होने की विशेषता या गुण अवश्य होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(9) परिकल्पना को सत्य की स्थापना में सहायक होना चाहिए —

परिकल्पना की सहायता से सत्य को स्थापित या पुनर्स्थापित करने में मदद मिलती है। निर्मित परिकल्पना की जाँच अनुभविक (Empirical) आधार पर किया जाता है। इससे परिकल्पना की सत्यता का परीक्षण होता है। माना कि परिकल्पना असत्य भी हो जाता तो भी एक तो एक निष्कर्ष होता होता है। अतः हम यह पाते हैं कि दोनों अवस्थाओं में एक निष्कर्ष स्थापित होता है यह परिकल्पना की एक महत्व पूर्ण कसौटी मानी गई है।

(10) परिकल्पना को संप्रत्यात्मक रूप से स्पष्ट होना चाहिए :—

शोध से संबंधित परिकल्पना निर्माण के वक्त इस बात पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक होता है कि इसमें प्रयुक्त संप्रत्यय सुस्पष्ट हो तथा जिसकी पूर्ण व्याख्या वस्तुनिष्ठ ढंग से किया जा सके, और दूसरे भी उसे उसी रूप में समझ सकें। साथ-ही-साथ संप्रत्यय को सही ढंग से परिभाषित किया जा सके। यदि

परिकल्पना में प्रयुक्त संप्रत्ययों की स्पष्ट व्याख्या एवं सर्वज्ञान्य

Scanned with CamScanner

परिभाषा की विशेषता अवश्य होनी चाहिए।

(11) प्राक्कल्पना को पद्धति विकास में सहायक होना चाहिए :—

प्राक्कल्पना की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि यह पद्धति विकास में सहायक होता है कभी-कभी परिकल्पना का स्वरूप ऐसा होता है कि उसके अनुभाविक प्रमाणीकरण (Empirical verification) के लिए नई अध्ययन विधि या उपकरण एवं परीक्षण का विकास करना आवश्यक हो जाता है अतः परिकल्पना में यह विशेषता भी पाई जाती है कि इससे नई पद्धति का विकास होता है।

(12) परिकल्पना को सिद्धान्त रचना में सहायक होना चाहिए :—

परिकल्पनाओं से नये-नये सिद्धान्तों की रचना भी की जाती है। शोधार्थी द्वारा परिकल्पनाओं के निर्माण के पश्चात् वैज्ञानिक पद्धतियों से उसकी जाँच बार-बार की जाती सभी प्राप्त समान निष्कर्षों के आधार पर एक सिद्धान्त की स्थापना की जा सकती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परिकल्पना में नये सिद्धान्तों की रचना की विशेषता पाई जाती है। अर्थात् सिद्धान्त रचना मनो वैज्ञानिक प्राक्कल्पना की एक महत्वपूर्ण कसौटी है।

Scanned with CamScanner